

सिद्धपीठ श्री राम साई धाम, अगया बुजुर्ग, कठौतिया, बभनान, बस्ती

शिवरात्रि

भारत में शिवरात्रि हिन्दुओं का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। हिन्दू धर्म व हिन्दू पंचांग के अनुसार वर्ष के प्रत्येक माह में एक मासिक शिवरात्रि आती है अर्थात् एक वर्ष में 12 शिवरात्रि आती है। जिस हिन्दू कैलेंडर वर्ष में एक माह का अधिकमास/मलमास पड़ता है उस वर्ष 13 मासिक शिवरात्रि मनाई जाती है।

शिवरात्रि का शाब्दिक अर्थ "भगवान शिव को समर्पित रात्रि" है। भगवान शिव के रात्रिकाल में निराकार रूप से साकार रूप में अवतरण के कारण इस त्यौहार को शिवरात्रि के नाम से जाना जाता है। शिवरात्रि में भक्तगण रातभर भगवान शिव की पूजा-अर्चना/आराधना करते हैं।

प्रत्येक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि पड़ती है। साल की 12/13 मासिक शिवरात्रियों में से महाशिवरात्रि (फरवरी-मार्च) तथा श्रावण शिवरात्रि (जुलाई-अगस्त) को सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। फाल्गुन मास की चतुर्दशी/शिवरात्रि को महाशिवरात्रि कहा जाता है तथा श्रावण मास के चतुर्दशी/शिवरात्रि को श्रावण शिवरात्रि तथा त्रयोदशी को श्रावण तेरस कहा जाता है। श्रावण माह में काँवड़ यात्रा की अत्यन्त महत्ता है। सावन/श्रावण शिवरात्रि को काँवड़ यात्रा का समापन दिवस भी होता है।

ऐसी मान्यता है कि महाशिवरात्रि अर्थात् फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से सृष्टि का प्रारम्भ हुआ। पौराणिक कथाओं के अनुसार इसी चतुर्दशी के दिन सृष्टि का आरम्भ भगवान शिव के करोड़ों सूर्यों के समान प्रभा वाले लिंग अर्थात् अग्निलिंग, जो देवाधिदेव महादेव का दिव्य एवं विशालकाय स्वरूप है, के उदय से हुआ। शिव पुराण के ईशान संहिता के अनुसार सृष्टि की शुरुआत में इसी दिन मध्यरात्रि में भगवान शिव का निराकार रूप से साकार रूप में (ब्रह्म से रुद्र के रूप में) अवतरण हुआ। इसी समय भगवान ब्रह्मा व विष्णु द्वारा प्रथम बार शिवलिंग का पूजन किया गया था। शिवलिंग निराकार शिव का ही प्रतीक है।

महाशिवरात्रि का त्यौहार मनाये जाने के अन्य कई पौराणिक कारण भी हैं। मान्यता है कि महाशिवरात्रि के दिन ही भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इसीलिए शिवभक्त इसे भगवान गौरी-शंकर के विवाह की वर्षगांठ के रूप में मनाते हैं तथा रात्रि में हर्षोल्लास के साथ शिव बारात भी निकालते हैं।

एक अन्य पौराणिक मान्यता के अनुसार जब समुद्र मंथन से विष निकलने पर देवता तथा राक्षस किसी ने भी विष को स्वीकार नहीं किया, तब भगवान शिव ने संसार के उद्धार तथा सभी प्राणियों की रक्षा व कल्याण हेतु उस हलाहल विष को पी लिया परन्तु उसे अपने उदर में नहीं जाने दिया। उस विष को भगवान शिव ने अपने कंठ में ही रोक लिया जिसके कारण उनका कंठ नीला पड़ गया और वे नीलकंठ कहलाए। भगवान शिव की विष की गर्मी कम करने के लिए सभी देवताओं ने उन्हें जल से स्नान कराना प्रारम्भ किया। तभी से विष की गर्मी तथा प्रभाव कम करने के लिए भगवान शिव का जलाभिषेक किया जाता है। विष पीकर भगवान शिव ने सम्पूर्ण सृष्टि,

देवतागण, मानव, जीव-जन्तु सभी की रक्षा की, इस कारण भी इस दिन महाशिवरात्रि का त्यौहार मनाते हैं।

एक अन्य किवदन्ती के अनुसार राजा भगीरथ की तप से जब माता गंगा पूरे उफान व अत्यन्त वेग के साथ रौद्र रूप में पृथ्वी पर उतर रही थीं, तब पृथ्वी को उनके वेग से बचाने के लिए भगवान शिव ने उन्हें अपनी जटाओं में धारण किया था। इसी चतुर्दशी के दिन माँ गंगा भगवान शिव की जटाओं से होते हुए पृथ्वी पर पहुँचीं। भगवान शिव की जटाओं में उलझने से माँ गंगा का वेग कम हुआ, जिसके कारण पृथ्वी का विनाश होने से बच गया। अतः इस दिन को महाशिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है।

यह भी मान्यता है कि प्रलय की बेला में इसी दिन प्रदोष (त्रयोदशी) के समय भगवान शिव ताण्डव करते हुए अपने तीसरी नेत्र की ज्वाला से ब्रह्माण्ड को भस्म कर देते हैं। ब्रह्माण्ड के विनाश के बाद सम्पूर्ण सृष्टि जलमग्न हो जाती है। इसीलिए इसे महाशिवरात्रि या जलरात्रि भी कहा जाता है।

शिवलिंग परमपिता परमेश्वर शिव के ज्योतिरूप को दर्शाता है। ऐसा माना जाता है कि परमपिता परमेश्वर एक निराकार, पवित्र व स्वदीप्तिमान दिव्य ज्योति पुंज के रूप में हैं, इस ज्योति को अण्डाकार रूप में दर्शाया जाता है। इसलिए भगवान शिव की ज्योतिर्लिंग के रूप में पूजा की जाती है। परमपिता परमेश्वर ही त्रिमूर्ति हैं। त्रिमूर्ति शिव ही भगवान ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की स्थापना कराते हैं, भगवान विष्णु द्वारा सृष्टि का पालन कराते हैं और भगवान शंकर द्वारा सृष्टि का विनाश कराते हैं।